

Padma Shri



SHRI NAMDEO CHANDRABHAN KAMBLE

Shri Namdeo Chandrabhan Kamble is a well-known author of Marathi. He is a member of National Book Trust, Delhi. He is a prolific writer not only in fiction and poetry but also in the field of critical and philosophical writing. He who had been a teacher, journalist & orator is a sensitive poet and critic in Marathi literature.

2. Born on 1st January, 1948, Shri Kamble left his M.B.B.S. degree education due to his bad financial condition. Then he started his career as watchman in School. There he took further education privately. He achieved B.A., B.Ed. degrees and got promoted as teacher in his School, Rani Laxmibai Kanya Shala Washim, Maharashtra.
3. Shri Kamble was interested in literature from his childhood. He started writing poems from 1971, then short stories from 1984. Within 3-4 years his poems and short stories were published in famous monthly magazines. His novel 'Raghavvel' was published in 1993. It is a story of Dalit widow Valambi and her kids. Until 1993 no other novelist had focused on Dalit woman i.e Dalit widow woman. He wrote two parts of Valambi and her Kid's life. The second part of their life is 'oonsawali' and the third part is 'Sanjrang'. He thus wrote first trilogy in Dalit literature.
4. Shri Kamble studied the thoughts and works of Gandhi and Ambedkar. His books focused on the conflict and co-ordination of Gandhi and Ambedkar instead of focusing only on their conflict like many other writers. It was his own thinking about Gandhi and Ambedkar. In his 50 years of life as a writer his 8 novels and 14 other books were published. His 14 books are short stories, poems, critics, characters etc. Mr. Jagat Debnath translated Raghavvel from Marathi to Bengali in 2009.
5. Shri Kamble was Chairperson of 2nd Samarasta Writers Annual Conference in 2004. He was also chairperson of 57th Vidarbha Writers Annual Conference in 2007 Balbharati Bureau of Marathi Curriculum Research, Pune. He was the Member of All India Marathi Literature board. He was interviewed several times by Radio and T.V. Channels. In the universities like Amaravati, Nagpur, Nanded, Kolhapur, Pune, Mumbai Six Ph.D degrees were awarded on his literature.
6. Shri Kamble is recipient of various awards and honours including Maharashtra State Annabhao Sathe Award in 1997; Lifetime Achievement Award from Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University Aurangabad in 2018. In March, 2009, Sahitya Akademy had chosen him as a fellow in writer's residence scheme. In those 8 novels his Raghavvel and Oonsawali conferred by Maharashtra State Govt. awards in 1994 and 1996 respectively. His novels 'Raghavvel' and 'Raghber Dinrat' were conferred by Sahitya Akademy Award in 1995 and 2012 respectively.



श्री नामदेव चंद्रभान कांबले

श्री नामदेव चंद्रभान कांबले एक जाने-माने मराठी लेखक हैं। वह नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली के सदस्य हैं। वह केवल उपन्यास और काव्य के ही नहीं, अपितु बल्कि समालोचना और दर्शनवादी लेखन के क्षेत्र के एक प्रखर लेखक हैं। एक शिक्षक, पत्रकार और वक्ता के साथ-साथ, वह मराठी साहित्य के एक भावात्मक कवि और समालोचक हैं।

2. श्री कांबले का जन्म 1 जनवरी, 1948 को हुआ था। खराब आर्थिक स्थिति के कारण, उन्हें अपनी एमबीबीएस की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। इसके बाद उन्होंने एक स्कूल में चौकीदार की नौकरी की और उसी दौरान अपनी आगे की पढ़ाई प्राइवेट छात्र के तौर पर पूरी की। उन्होंने बी.ए और बी.एड. की डिग्री प्राप्त की और उन्हें अपने ही स्कूल रानी लक्ष्मीबाई कन्याशाला, वाशिम, महाराष्ट्र में शिक्षक के तौर पर पदोन्नति दी गई।

3. श्री कांबले को बाल्यकाल से ही साहित्य में रुचि थी। उन्होंने वर्ष 1971 से ही काव्य रचना आरम्भ कर दी थी और 1984 से लघु कथाएं लिखनी शुरू कर दीं। 3-4 वर्ष की अवधि के भीतर ही, उनकी कविताएँ और लघु कथाएं प्रसिद्ध मासिक पत्रिकाओं में छपने लगीं। उनका प्रसिद्ध उपन्यास "राघववेल" वर्ष 1993 में प्रकाशित हुआ था। यह एक दलित विधवा वलम्बी और उनके बच्चों की कहानी है। वर्ष 1993 तक किसी भी अन्य उपन्यासकार का ध्यान दलित महिला अर्थात दलित विधवा की ओर नहीं गया था। उन्होंने वलम्बी और उनके बच्चों के जीवन पर दो खंड प्रकाशित किए हैं। उनके जीवन का दूसरा भाग "ऊंसावली" और उसका तीसरा भाग "संजरंग" है। इस प्रकार, उन्होंने दलित साहित्य में पहले उपन्यासत्रयी की रचना की।

4. श्री कांबले ने गाँधी और अंबेडकर की विचारधारा और उनके कार्यों का अध्ययन किया। उनकी पुस्तकों में अन्य लेखकों की तरह गाँधी और अंबेडकर के बीच मतभेदों के बजाय मतभिन्नता और समन्वय पर जोर दिया गया है। गाँधी और अंबेडकर के बारे में उनका मौलिक चिंतन था। एक लेखक के रूप में, 50 वर्ष के रचनाकाल में उनके 8 उपन्यास और 14 अन्य पुस्तक प्रकाशित हुईं। उनकी 14 पुस्तकों में लघु कथाएं, समालोचनाएँ, कविताएँ, चरित्र-चित्रण आदि शामिल हैं। श्री जगतदेबनाथ ने वर्ष 2009 में उनके प्रसिद्ध उपन्यास राघववेल का मराठी से बंगाली में अनुवाद किया।

5. श्री कांबले वर्ष 2004 में द्वितीय समरसता राइटर्स एनुअल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष बने। वह वर्ष 2007 में बाल भारती ब्यूरो ऑफ मराठी कैरिकुलम रिसर्च, पुणे में 57 वें विदर्भ राइटर्स एनुअल कॉन्फ्रेंस के भी अध्यक्ष रहे। वह अखिल भारतीय मराठी साहित्य बोर्ड के सदस्य थे। रेडियो और टीवी चैनलों द्वारा उनका अनेक बार इंटरव्यू लिया गया। अमरावती, नागपुर, नांदेड़, कोल्हापुर, पुणे, मुंबई जैसे विश्वविद्यालय में उनके साहित्य पर पीएच.डी की छह डिग्री प्रदान की गई हैं।

6. श्री कांबले को विभिन्न पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं जिनमें वर्ष 1997 में महाराष्ट्र राज्य अन्नाभाऊ साठे पुरस्कार, वर्ष 2018 में डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से लाइफटाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार भी शामिल है। मार्च 2009 में साहित्य अकादमी ने उनका चयन राइटर्स रेजीडेन्स स्कीम में एक फेलो के रूप में किया। उनके 8 उपन्यासों में राघववेल और ऊंसावली को क्रमशः 1994 और 1996 में महाराष्ट्र राज्य सरकार पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनके उपन्यास "राघववेल" और "राघवबेर दिनरात" को क्रमशः वर्ष 1995 और 2012 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।